

अथ कभी गा॥ ४८ ॥

॥ नाग गवडा गोत्रि ॥ नात्र माथ ॥

द्वंद्विलसत्रावप्रविलासयिकं ४८ ॥ १ उर्थरुला द्रमधुलनाया ॥
रुगमत्रा॥ ४९ ॥ ॥ अगगनिवासियात्र २ अमिय अमिया नीलंग
लदला २ सरुअ सुन्दप्रिलेयाजिन हंल प्रविस्य नाथ यिअ २ अग
गनिवासियात्र २ उवडयागिलिहं मला २ वजवायादिशालि
गणकाहं नावयिअ अगगनिवासियात्र २ उर्थरुलात्रा वव

अथ

मगयज्ञा

[illegible]

सुन्यानायक कल. रत्नायंभिविकंधनील

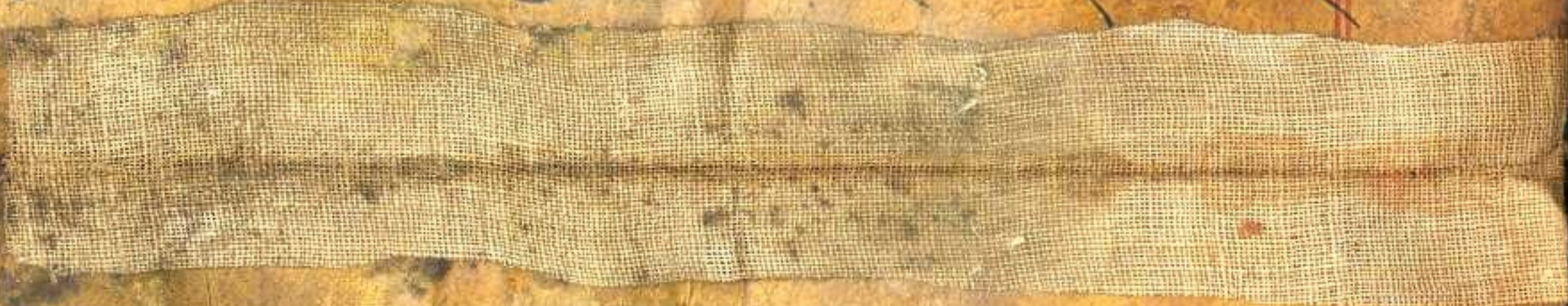
ॐ धर्मदत्ताय नमः ॥ १ ॥ यत्किंचिद्वन्द्वमत्र या ननु भक्तः
 सहस्रयागिणीनेयाह नृवरुनृवा ॥ २ ॥ भक्तगुणवत्तत्त्वसिद्धि
 गतधर्मिया. रुतयिवाक्वद्वज्रसूत्रनसूत्रय ॥ ३ ॥ उक्तद्वीवाप्रणीमा
 मकीद्वी ॥ ४ ॥ ॥ नमो ब्रह्माय नमः ॥ ५ ॥ द्रविण
 वर्णुगी. शिन्तय नमः ॥ ६ ॥ द्रविणवज्रोवना नादनसारु ॥ ७ ॥ उक्तद्वीना
 मकीवाप्रलिद्वी ॥ ८ ॥ ॥ श्रीरामायणाय नमः ॥ ९ ॥

मनसः कर्म... कायायतना... मयि... गायत्र्युक्तं... १... चतुर्गुणं...

गोपबन्धन

प्रकृतं स्वतन्त्रं २ तुम्हा... ॥ १ ॥ हकात्र...
वर्ष... काका... ॥ २ ॥
मनसुत्र... ॥ ३ ॥
॥ ४ ॥ ॥ गो... ॥ ॥ गो... ॥
॥ ५ ॥ ॥ गो... ॥ ॥ गो... ॥
॥ ६ ॥ ॥ गो... ॥ ॥ गो... ॥

गोपबन्धन



गोपबन्धन

नन्द... ॥ १ ॥ ॥ गो... ॥ ॥ गो... ॥
॥ २ ॥ ॥ गो... ॥ ॥ गो... ॥
॥ ३ ॥ ॥ गो... ॥ ॥ गो... ॥
॥ ४ ॥ ॥ गो... ॥ ॥ गो... ॥
॥ ५ ॥ ॥ गो... ॥ ॥ गो... ॥
॥ ६ ॥ ॥ गो... ॥ ॥ गो... ॥

गोपबन्धन

थि॥ ॐ ॥ वीनवीनध्वनवेणीथल. मण्डलभाहनिविध्वरु ६
 लिया २३६६ कात्रावलिंगदवी. दामयगियाविद्युनिवात्रय॥ म
 ध्वशीसम्भवेमाडकात्रवक. रुवजकायविध्वरुलिया २थाग
 थागिणीमप्रियाविध्वजननी. समयाश्रानन्दरुनकिहायि॥ सि
 रुनादवाजियाप्रउमत्रयुग्मद. श्रुथ्यागिणीदानयुग्म २जाल
 धनपुत्रश्रुवध्वनप्रथिया २कर्णुयात्रनगरुनकिहायि॥ १० ॥

कालविनाशिन ॥ २२ ॥ मण्डलभाह ॥ २३ ॥ मण्डलभाह ॥ २४ ॥ मण्डलभाह ॥ २५ ॥ मण्डलभाह ॥ २६ ॥ मण्डलभाह ॥ २७ ॥ मण्डलभाह ॥ २८ ॥ मण्डलभाह ॥ २९ ॥ मण्डलभाह ॥ ३० ॥

॥ ॥ नागसयगिछा॥ नात्रविममयवकगलि॥ शिदत्रमंलालरुदि
 नकलमण्डल. नाजिगविद्युवनजननी. नगंगकनडवगिनिनयन
 मात्रवदुत्रगलकुन्दनी॥ दवीकत्रगिकयालधना॥ ॐ ॥ रुषि
 गतलसिलमाला. कमत्रवुलिगइथिगात्र. वाडयिनाकेथिसद
 उमंत्रयिणी॥ ॐ ॥ वकिगिलकर्णुकुल. कलुककिकस्व
 रात्र॥ हाथनात्रवकर्णियाडमखला. वनलनायलरुषणी ॥

ॐ
 ॐ
 ॐ

मयुजा

नीलाशुवालकदसयादि॥ पावदसुदायसनाप्र॥ अमसासकासदयिनसदि॥ नयोदकादवकसिदि॥

कयंवाहुनि

॥ ६६ ॥ रुचयदयानलकउधर्वभादाहिनीरुानवात्राया॥ रावां
कावविवाकैक॥ अनुरुनगगलसंवृयिनी॥ ६७ ॥ यदमयवउय
दगिलंगगवप्रियागावयिरुगवृलिग॥ अनुरुनसिद्धियभा
कयदायली॥ यलमामिथीवउथागिली॥ ॥ ॥
नामकह॥ गात्रवकगात्रा॥ कयंवाहुनिदवीनूवदवयलन॥
मयनसुलासुनवन्दिगत्रप्रल॥ नरुगवगीयाइकमलमदि

कयंवाहुनि

मधुनसमयवज

मधुनः नरुलनूलाइतकाला॥ हाउंरुचयश्रारुनविहयिकन
डलघुडलाला॥ यिनि॥ यिलयंरुनयलकना॥ ६८ ॥ मिलसिं
दूवकात्रिकर्जनलयन॥ कसुत्रिकयवउनयिगाभात्रा॥ ६९ ॥
कात्रिकयात्रकात्रिमधुमालमालारुयिक॥ रुचयसुखांगक
यात्रकात्रिक॥ ७० ॥ रुचयिसुत्रकवउवाहुनिदासथीवउ
यागिलीवनदयसाद॥ ७१ ॥ ॥ नागयमंजलि॥ गा

वि

राजसमुद्र

लमाठ॥ मधुलसमयत्रक मधुलसंयुर्लु॥ द्वादशकुचउवापि
यात्र॥ ६ ॥ जानकुचवृष्यशीसम्बत्रथागिणीः श्रीयावद्वना
दवीगात्रुणीगकिनीलात्माखपुनादावृयिनी॥ चानीमात्रवद्व
वांयात्र॥ कायवाचिकगिणिशुवनायानयगियाभुनमृवगात्रुणी
या॥ जागजागिणीभनि समनर्मरात्रमृष्टमभनधीरुनव वा
॥ १४ ॥ ॥ नागनाटक॥ गालइउमाना॥ रानमधुलमाउ

मामकिमुना

नमःशुभाका

मामकीदवी आलिकालिइयिचाययिरुनव॥ ६ ॥ नमामि
गीमामकिदवीगिउवननाथा॥ संयुर्लुमृमृनकभुजगनवखाभा॥
॥ ६ ॥ जाकिणीलात्माखपुनादावृयिणीवद्वदवीकीउमिविला
सा॥ ६ ॥ रपिमवटमदाकृणीनवीनवव रुनयिभुनय
मवजमामकीदासा॥ १५ ॥ ॥ नागरुववि॥ नात्रइउमा
न॥ नमःशुभाकात्रुणववव॥ मरुमिसखडगात्रुणवृणा॥ ननाह

प्रयदान

[illegible]

四

नमो भिद्याग न

श्रीगणेशाय नमः

आगाम्यज षोडशतस्तुतिनीयप्रभध्वनी। इतिगह्वरप्रभध्वनिध्व
 लं बुद्धदा १ हस्तजकिनी आलिंगम् ॥ ननाहं हं ननाहं ननाहं ननाहं
 हं हं हं ॥ ददिनगजसुत. वामधनधनः पूवयुगवृक्ष कयात्रध्वनी
 वज्रघण्टियेनाचनसन्दनयहसिनकाटधृंगाना ॥ ६ ॥ यदम
 यवजयदमाध्वरुगवनी. लावनुयलुगियुधयदं ॥ रुवनु २ स
 र्ववधनभाचयसर्वजगगडहाना ॥ ६ ॥ विविधमात्रवलवि

कृपाजानगजदग १ ॥ मकवदं किं ननु ॥ सतुयमानरुनवाननायः कन्नाट्यागमिधिवकृतील
 ध्वनिनागनामध्विसिधिवलदायकं ॥ ६ ॥ जनम १ रुगयायक
 यंकन. आदिवृद्धयप्रभध्वनी ॥ १८ ॥ ॥ नागकक्षादि ॥ नाग
 ३या ॥ नीलहं कालयहलिंगकित्राण १ उर्ध्वपिंगलकं गथीरुवज्र
 प्राया ॥ जगगभाकृकात्रीयीनेनात्मादवी ॥ ६ ॥ नीलवर्धुदवी
 कवगिकयालधात्री १ जगगभाकृकात्रीयीनेनात्मादवी ॥ ६ ॥
 काधवित्रदिग. आलिंगासमाधि १ वाउग रुजकनाठकध्वनीया

नीलहं काल

रुज

विनाशकालेऽपि नाना ज्ञानवान् लाजां कालेऽपि नाना ज्ञानवान् लाजां कालेऽपि नाना ज्ञानवान्

॥ ५ ॥ गङ्गाविरुषिगघटमृदा रुत्राणा व्याधुवर्मयवदिगनल
गिलमाला ॥ ६ ॥ वक्तामदध्वप्रनाजायन ॐ न्य २ वाययिचडवा
नलचतुर्मीप्रमर्दनं ॥ ७ ॥ १० ॥ नागवक्रादि ॥ नात्रघटकंका
न ॥ अवनित्रीदिगावामजोरुनसर्व्य खड्गवित्रा ॥ मात्रमंशासा ॥
नागद्वयमारुचन्निप्रयाग ॥ विरुवननाया अर्धप्रवीला ॥ ८ ॥
नमामिणीवन्दमहात्रायण ॥ शारमृत्कुट्टदिगा ॥ विश्वनाथविश्व

व्याधिर. वीरविश्वमहाकाटनाया। शममृत्कृच्छ्रदिना॥ श्रुतिशिव
 लारुगपत्रन्दा. ददुक्कनायाविश्वमृत्कृच्छ्रदिना. पिल्लुगमृत्कृच्छ्रदिना
 लनयना. वेवि संज्ञासात्राखरूठन॥ माधवमायायूत्रलुनवः
 क्कनूदयिष्ठावायालुन॥ समप्रसंमायात्राविभाहा. ध्यान
 ननागभादिगददा। नन्नारुन॥ यकलिनभीति. कयूननायून
 नूळउनकाजा. सूत्रनननागावंदिनव॥ नायसूत्रध्वनश्च

मामाउकेसीमनवरमानः सरलसत्त्वनिवसंप्रजाताः कुलसनामः यथाविशमः मांस्मृतोदकिनपुंजलीय

नवीना॥ २० ॥ ॥नागगुह्यनि॥ नाप्रमा०॥ अमत्रगिदलस
ननालरुविनाजिगा. शिखवनसचलाचत्रचक्रया॥ ६ ॥ अ
किनीवत्रनी. वरुवेवाचनि. श्रीदवीशिसकि शिरुवमाता २ ना
शिमलुलमा ५ रवमन्यवी २ शिनिचकरुदिनिगिनिनयना॥ ६
शिनिगलवययय. शिरुवव्यायिगा. अखयनिलंजनआगिद्रपा
॥ ६ ॥ उगुगिमगुगिवनददिममागाधीवर्जथागिणीयादग

अमत्रगि

कुधकि

नीसगतलो गविरुपलयानसारः साकाग २ यवनवडकमः उगुडलानावकासा

वृष्ण॥ २१ ॥ ॥नामगन्धामरवि॥ गालजटि॥
उंआः रुंरुटमनेखासा। मनुवि। षडवाचन. पूजायूजिगयूज
मंराव्य. गल्लसुवृयशुवनुवा॥ ६ ॥ खखखादिगअप्रिवप्रिय
जाल्लघघ. घाकय २ विघ्नरुत्रयक्रमियाप्रसं. यकेर्णदप्रिय. यं
नमंवल्लिना॥ सर्वजकनाकसंरुमयमयिगावअयसावृन॥ अ
कजाकिणीदयी. अरुममगान. कंदवल्लिगृद्रुनुवा॥ समयात्र

उंआः २५

बलिपुत्रा

उपनिषद्

अनुभाऊ निदिन. सर्वसुखसंयुक्तं भाविना यथेव यथेव हृदयं
यिद्वथल जिह्वा साहकारं ननु न॥ नानयमि सर्वका विविदिन
मनात्रथमवसुखं यदभाविन॥ आपसंसात्रमथागं ननु ननु
हायका ललवदुन॥ २२ ॥ ॥ नगविनासा॥ यात्रम॥ ३॥
दिनामत्रल ययव नक्षमा २ वल ननु दामसं योको संयोजा
धानइस्तनरुयनिगात्रनिगा॥ यययनिनअनभा दगमा॥

उपनिषद्

ननु यो लोको लोको विवदभासाः मातृययका मनामकमलासवासा आरु यवदुनभासासवत्

३३

ननु यवमाधुलमध्वगमासका मजलमसधरागा॥ २॥
मधुमिच्छयमिनिदमा दवासा लननमववका॥ ३॥
॥ ३३ ॥ ॥ नगविनासा॥ यात्रम॥ ३॥
ननु यवमाधुलमध्वगमासका मजलमसधरागा॥ २॥
ननु यवमाधुलमध्वगमासका मजलमसधरागा॥ २॥
ननु यवमाधुलमध्वगमासका मजलमसधरागा॥ २॥

उपनिषद्

ननु यवमाधुलमध्वगमासका मजलमसधरागा॥ २॥

[illegible]

॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
 ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥
 ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥
 ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥
 ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥
 ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६ ॥
 ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥
 ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ८ ॥
 ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ९ ॥
 ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥

जमदियात्रिलक्षणा. सात्रिभयन. वलसूहमयना. कर्षवहन
 दिगन्ध्याना। गगननिवावर्णु. वन्धिप्रदाया। भद्रमलुलरुवनी
 ना। शिषधनखद्वा। गच्छादि। गलसम्बन. पयिसयिगुन्दरुवना
 वा। हसविनाहिन. वज्रवावादी। उक्ताविनदधिश्चन्धना। गावंगि
 लिनावज्यागिणीयात्र॥ समयुत्रवत्र। एन्धवाधिया। समयाग्ना
 नन्दरुलि। ग्यनामलुलसम्बलवज्रवावादी॥ ॥ २५ ॥

नमो गौतमिनि॥ मायवकननि॥ वकिं कुंजुल कलिनात्र दमय
 वरुषिगिनिव नयनल मिलमाला २ सनवकि रनेयारुस
 विरुषित गगणभावि वरुलिमाला॥ ५६ ॥ अमृगसिद्ध
 वदभाद्रकावा ३ गगनाथी सम्वननाया २ वरुकाटवकाथ
 धनिया कलदीलहखदाग २ ससुटथागिलिकमत्रविहासि
 गनसहासखमनियसाद २ वरुकावादिशालिंगणसम्वनना

श्रीगणेशाय नमः

पादपिप्लव

वयिवद्विहर्तृग २ वाक्कनिकात्रयिदिकिहृद्ववमूर्धरुन
 रुलनयसाध २ सरुकासंवृद्धिनेयागावकि कर्तुया दनववम
 लयगाद २ दहलालिंगणहृद्वनीलदधुविनासयिधुन्य ॥
 ॥ ॥ २३ ॥ अमिहृजाचनमीग ॥ ॥ नागगन्धप्रक
 यवि॥ मात्रय॥ यिलिनायनकडुवक्रविहाना २ कनहखदि
 धनमंगलकाभ ॥ ५७ ॥ कामकनेयाकाभनदिवडमाला वा

शिलिनायन

कामाचन

का. प्र. वि.

गङ्गासमाह्वयविनष्टादिया॥ ५॥ वामददिनकथ. सप्तविंशति
यावत् २ कालिगवज्जाननत्रा। हनिकत्रिया॥ ५॥ यहाद्वष्टदया
यित्रवर्जि २ नविठगिवायियाव. आत्रायवेथत्र॥ ५॥
कर्णुवात्रकसूत्यनकाभ २ वायुसंवरुदित्रवियासंवात्र॥ ५॥
॥ २७ ॥ नागकात्रयि॥ नागसूक्तमा०॥ कात्रयित्रथिडवात्रा २ म
सजिनककात्रा २ द्यनकायिथिडवात्रा २ कनलक्रियाप्रिनला

का. प्र. वि.

ना॥ ५॥ मलयाद्वर्कइत्रवात्रयिया २ लिंदिवात्रयियावत्र
यिया २ गदिवात्रस्वात्रयिमाध्व २ मयनात्रावयियायिया २ दाल
कालिङ्गलसात्रिकत्र २ इइत्रवात्रयियायिया. वडसमकसुलिठिअ
कथ्यनलावत्रयियायिया २ मानियायिधनसालिङ्गल २ ग
दिंवात्रस्वात्रयियायिया २ थुवनकवकवमं. सडासदनमभियायि
या नीलसकमंमसदावयिया २ गदिंसवावण. पुनसामिया॥ २८॥



गंगाप्रिया

गंगाप्रिया ॥ सातवें भाग ॥ गंगाप्रिया उर्द्ध साधना प्रिया कमल
माला ॥ श्री गंगा उद्भव मन्त्र ॥ गंगा नमो नमो ॥ गंगा नमो नमो ॥
गंगा नमो नमो ॥ १ ॥ श्री गंगा नमो नमो ॥ गंगा नमो नमो ॥
गंगा नमो नमो ॥ गंगा नमो नमो ॥ गंगा नमो नमो ॥ २ ॥ गंगा नमो नमो ॥
गंगा नमो नमो ॥ गंगा नमो नमो ॥ गंगा नमो नमो ॥ गंगा नमो नमो ॥
गंगा नमो नमो ॥ गंगा नमो नमो ॥ गंगा नमो नमो ॥ गंगा नमो नमो ॥

गंगा

गंगा

गंगाप्रिया ॥ सातवें भाग ॥ गंगाप्रिया उर्द्ध साधना प्रिया कमल
माला ॥ श्री गंगा उद्भव मन्त्र ॥ गंगा नमो नमो ॥ गंगा नमो नमो ॥
गंगा नमो नमो ॥ १ ॥ श्री गंगा नमो नमो ॥ गंगा नमो नमो ॥
गंगा नमो नमो ॥ गंगा नमो नमो ॥ गंगा नमो नमो ॥ २ ॥ गंगा नमो नमो ॥
गंगा नमो नमो ॥ गंगा नमो नमो ॥ गंगा नमो नमो ॥ गंगा नमो नमो ॥
गंगा नमो नमो ॥ गंगा नमो नमो ॥ गंगा नमो नमो ॥ गंगा नमो नमो ॥

गंगा

अथ न्यायान

मयि मा ननिनवात्रलद २ जीनयययानिप्रंनंदायूत्रक. जीनऊ
नदी वऊआगिलि २ ऊयं २ दाउआरुननससाग. कननिकघा
नयप्रधात्रि २ ऊयं २ नूदसममनननं. गिप्रिप्रनूदनलमिल
माला २ ऊयं २ नाखदूऊगगसंसात्र. यलमामिश्रद्वयंवाकूनि
ला ॥ १० ॥ **॥ नगरुनवि ॥ गात्रइय ॥ श्रुद्वकूयालदि**
गंविदिगंउवम २ धंसिलमात्रवउवघन २ गगलसयत्रगग

लऊनऊनकाला. गगलदाभाप्रघणुवाजियात्र ॥ दूदूदूतमा
मियक २ गकिनियकेशवकिहानगकिनिसत्रलइगंगा २
पूवदूऊनयकिमदकिणवउत्ररुवन विद्यमालविघनख
लियात्र २ वऊगकिनिधात्रननात्रगकिणी. वन्दालगकिणी
वउवदवी २ सिंघनिव्यांघिनिऊम्वकडलाकिलि. खद्वंगाय
वगुयागश्रूकूणदला २ गकिलिदीकिलिवउरि कवाऊनि

उदितगुरुवन

धालनम्भादवकावदना २ जिनऊननीदवीडाकिनिदुपयि
सत्रल. यक्कमदारुप्रधुषनीया २ खज्जुठकवज्जघष्ठवडा
गयाग २ यलमासिदवीधीहानध्वनी ॥ ३१ ॥ ॥ वागः
यमऊलि ॥ सात्रनाठ ॥ उदितगुरुवन. कमनासनकित्रल. ललि
गयटनदावनसागा २ निर्मलकदय. कनूणमयनाथा. ददि
मूरुयवलपुकागा ॥ ६ ॥ उक्तादवशगशगसत्रल २ विउ

वडाद

६॥३॥

वनव्याधिगङ्गागडुद्वालिया २ यनमासिवगमलाकध्वन २ क
नकनगनमलिदात्रविदुधिया २ कनकसयवगधत्रि ॥ वागः
कयधत्रवदलेआरुव. सलऊआनन्दमन्त्रि २ सत्रनलय
ऊकिन्नवगधपूडिगा २ ललाटवत्रलभिलंगगधत्रिया २ मि
मिलधात्रखत्रभाऊयकागा २ दर्शनयायइठखरुत्रल २ नक
वधुमखनयनसत्रावना. सर्वत्रऊलसंयुधु ॥ नगनयत्रिग

उपकु... कागद... नमो...

कामनविकारिण

कृष्णमालिका केवला २ मयमधुलहवनवाञ्छया ॥ ३२ ॥
नागनामकानि ॥ नात्रमाथा ॥ कननविकागिरिगिरिदधामन
वृक्षपुपियवर्षुसमदला २ वृक्षनवदनवृक्षनयदलसनवृ
क्षयकाशिका ॥ ६ ॥ नमामि श्री श्री मदान ॥ श्री सत्कनयु
लनायसुमर्गला २ वृक्षनिददनरुननवययद सर्वरुहाननि
विनागला २ यथमकनदयधालिनवञ्छय ॥ मृदामालिङ्गण

मंरुणी

नमामि २ जिनभक्त

नाडिका २ द्वितीयवृक्षधनरुमीयहानरुक्षध्वचतुर्थखनसर्व
कृष्णपत्री २ मरुयकुञ्जयवृक्षधर्मनायचतुर्थवानवृक्ष
यूक्तका २ नगनमकाटगिलयहलिंगविस्त्रियमध्वनविवना
२ निवृद्धिवृद्धिदायिनिमिगरुनिगा २ सर्वरुहाननिधिरुवय
दाता २ वृक्षसुवर्णसलनमार्गीरयत्रमाड्यकुञ्जयनि ॥ ३२ ॥
॥ नागरनवि ॥ नात्रइडमान ॥ नमामि २ जिनभक्तवृक्ष

नमामि २

जनवदुचममृगिआत्रं कृता २ ये ३३३ नय के धाउकस्य नूय. व
 छधर्मिआत्रयस्य ना॥ ३३ ॥ ननाहं २ उगक संसाल उधनिगाम
 नाहव. नमास्तु २ ये ३३३ नय के धाउकस्य नूय. व
 मृद्विसिद्धि व २ या य जी २ इति कुरुन सर्वया य रुयं कवदान व
 ल्यप्रहृमा कृयदा॥ ॥ ३४ ॥ नागडं॥ नमामि २ धर्म धाउ
 वागध्वल धाउठा इवात्रयत्रिमल्लिमाः धाउठा मात्रल उनड

नकात्रा. सर्वदवयत्रिमल्लिमाः २ नमामि २ वागध्वल मल्लुल य
 द्वागिनिनिवासिना २ सत्वविः ३३३ इवागिना सन॥ यलमा
 मिजिनवक वनी २ ननाहं ३३३ ना॥ ३५ ॥ ॥
 नागव सत्वललिम॥ मात्र इउमान॥ मृद्वयत्र संना उडर
 वयु कासि नयी धम्य मृनिवल ध्वा नसावत्रना॥ दहिनवज
 याणि. वामक मलयाणि. नमामि यी धर्म नाय मया मत्रि ॥

अथ

न

सुवर्णश्री

यदिनविमिलिधन. त्रामकूलिगया. त्रिविधवीवलधउ. उ
वनव्याधिगा॥ ॥यदिनवडायालि. त्रामकमलयालि. नमा
मिणीधर्मनाथमहामूलि॥ कु ॥ कावलिमानसनिर्मलद
दय. सखडडावनश्रुययदागा॥ कु ॥ उपमरसुगमव
लस्यविम. उक्तासुमत्रलभाकपदागा॥ ३३ ॥ नागहेयवि॥ ना
वडया॥ पूर्ववक्तायणीहंसमानूरा. कलकवदनश्रुदसुयधानि

मोशका

नागशंभुनमानशिः

श्रीवेष्टुवीदवीः सपन्नवाहना २ तिष्ठवनकुननी
शंखचक्रहस्ता २ नमामिदवीदुर्धीवर्कत्रयिनी २
विदुयिमहासमभानसमूर्वी॥ कृदतिलसना
महासुखदागाः कंदववृकुतनः निवासिनिया॥
तवतयहनलः नाननदुःखा २ तकिपुष्पदः ॥
नरुनसिद्धिम॥ तनयिः सतशुवनदपुष्पादः
मन्दादिददुःखहनवी ॥

Handwritten text in Devanagari script on aged, stained paper. The text is arranged in approximately six horizontal lines, though some characters are faded and difficult to decipher. It appears to be a form of Sanskrit or a related classical language.

उक्तमाह श्वत्र वृषवाहना. वलुधवत्रास विभूत रुक्मा ॥ ॐ ॥
हं हं अहं श्वत्रा न नीलवर्णु मदिना. अहं नव गलपगिमदि
मा ॥ अहं सिद्धि नूत नूत मा अयदायली. स्रमंत्रनियया पविनासि
मा ॥ यच्छिमं न्यायली हं सवाहना. वृक्का वदन वज्ररुक्मा २४
क्रिष्णवा नादि घनधान रुक्मा. अहं गुरुक्मा मदि यामनि ॥ ॐ ॥
अहं विदयी कुमवदना. सिंहवाहन खं रुक्मा ॥ अहं कामा

पूर्वदिशि स्तिगदंसा

प्रिययुववाहना. प्रकृताकावदनगकिरुता॥ नेअन्यनेकुवी
गत्रुवाहना. स्यामवदनवक्ररुता॥ वायुयवामुं कंकात्र
या. कर्किमं पुवगालमालधवना. अरुवृत्रनागमद्यादिना
यथात्रसरिगदवी. पुनमाभिदवीशी गवयादश्वर्वनः सुगु
किमृगुमिजगकात्रदवी॥ ३७ ॥ ॥ नागमाला॥ नागमा०
पूर्वदिशि स्तिगदंसासनीदवी. चन्दवदनीदवी क्षत्रिगशिधूना॥

माशुका

नभाभिशीलेनवमारुकागणयगिबुमात्रा॥ ३८ ॥ अरुलेनवअ
सूयागिजीअलिंगण॥ ॥ नाकावदनिसारिग. मयनासनिद
वी॥ विन्दूयात्रक्षत्रिनेकुवीदवीश्वदनधोत्रयिनि. वानादि
दवीश्वकुमवदनिळ्ळायलिदवीश्वकत्रंखजक्षत्रिगकंकात्र
मृत्रुमि॥ पुनमाभिदवीशीमदालकीसगण॥ ३८ ॥ ॥
नागलेनवि॥ मानयदकात्र॥ पूर्वदिशि स्तिगवक्षायलिदवी

कनकवर्णुंगी संसासनी २ उदिद्यादिदिशि । त्रुडायलिदवीत्र
 न्दसमदहा. वृषवाहली २ अरुसममभनवीलविभधन. नाकेयि
 सहजाश्रानन्दप्र॥ ५ ॥ यमिद्यादिगिस्त्रिग ०० न्दुयलिदवी. क
 म्मवर्णुंगी गऊवाहलि २ याम्यादिगिस्त्रिग. वानादिदवी. वदि
 समदहा. महिषासनी २ अरुनयुधिस्त्रिग. कामादिदवी. अ
 न्दसमनिशानि. मयूनासनि २ नेजुययुधिस्त्रिग. वेष्टुवीदवी.

पुनर्दिगिस्त्रिगवृषा

माशका

विनादयन्तिदयितं वगोनि । सूक्तकल्पवामनवानलान् । कल्पुदक्षनासूनरुक्पृथ्वी । वरांगलयंकथितं वलाल

रुद्रिगवर्णुंगी गत्रजसनी २ वायुवायुधिस्त्रिग. कासिकादवी
 मूथीसमदहा. थगासनी २ ६४६॥ नयुधिस्त्रिग. महालक्ष्मिदवी
 क्मवर्णुंगी. सिंहासनी २ गगनगुत्रवत्रल्लिल्यंगनधनियाग
 वकिमिद्धवज्रवजायागीग ॥ ३२ ॥ ॥ रागवत्रात्रि
 गात्ररुष्टि॥ वामखर्चनधनी. दहिनकत्रनि. पायलनायनमधु
 मालखयिगा॥ नाकेयिचकथागिचकथा ॥ ॥ विनिनय

वामवर्धन

वर्क्यागिनी

निर्गतिनिर्वाणविक्रमपञ्चः पुकं द्या कुरु वरा पुमान्तसगीतस्तत्रा पक्षिसदृशाय श्रीमासयमासवनानगरम्॥

दवी. शिखरवन्तयविस्मया॥ ६५ ॥ स्वस्वसूत्रमभादवीनित्रुनद
वी. शून्यपाशदवीशून्यस्वरावा॥ ६६ ॥ कालमृत्कइयिषा
लवन्धिया. नागद्वयभासकनगिनकुन्दिगा॥ ६७ ॥ शृङ्गिसंहा
लदवी. मातृलिदवी. भासमाग्निदवीउक्ताययिसत्रव्या॥ ६८ ॥
॥ नागमास्रवा॥ मातृमा० ॥ वज्रिधालिखंगानिचण्डालिनी
मिधिनियाद्यिनिउम्बकडल्लाकिणी॥ नमामिधीयागाम्बन

आयमश्चयः॥

[illegible]

वङ्गनादि

श्रीमद्भक्तानां

कनाटकद्विदितकत्रिगि॥ हाउआरुवणविरुषिगा २सूर्यमण्ड
लमाडः गात्यवमत्रिगिः नलसिलमातासमोरिगा॥ सनगुन
वजलसिलंगगधप्रिया २वजवात्रादिआलिंगल॥ ४२ ॥
॥ नागनाट ॥ गात्रइर्मान॥ श्रीमद्भक्तानाथवजमहावी
नत्रिजया. वजुहासखभुधनिनागवासरुल॥ नमामिश्यी
मंश्यमात्रा॥ ५॥ ॥ जगदिस्वत्रजगगनाथउवनव्याविका॥

मंश्यमात्र

श्रीमद्भक्तानां

॥ ५॥ ॥ यरुकधनागुरुवभागुत्रलायाथीधर्मधुस्वभ
नयालमणुलकका॥ ५॥ ॥ जगगनाथजगदीस्वत्र. नीलज
नलाया. सर्वसाकविसात्रदयलुगनिलश्रुता॥ ४३ ॥
नागकक्रा॥ गात्रइर्मान॥ श्रीमद्भक्तानाथवजमहावी
प्रमि २सूर्यमण्डलमालरुषिमंदहा॥ ५॥ ॥ गनाना २नमा
मि २थीस्वभमहाकात्र. द्विदितकत्रिगिधत्रममिगुना २हा

स्वभमहाकात्र

नक्रवधु नक्रमय

उत्तरा नरुषिगददा॥ कु ॥ सकनमालदयं लसका. सनन
नवदिगरुवरुयवला॥ कु ॥ मृद्विसिद्धिवलदायकदव
२यिउवनविवाधीमहाकात्रसत्रण॥ ४४ ॥
नागमालव॥ नात्रमाध॥ नकावधु उका मख विभयं दि
उज २ददिनरुजगजदस. महावलावन॥ कु ॥ नमामिशी
लीमस्यनयप्रभेधनं २वा मउज मूरुय मया धनं यथा निर॥

नक्रमय

सर्वपुत्रासासवदमनीव॥

मयनि

॥ कु ॥ जगगमं सालवारुल. यसादसिद्धित्वं २जगगमनां
कसिद्धिरुलददिम॥ कु ॥ यकषा लुवसदिन. इयमिसुन्द
लिदवी २मर्थलारुय धुलाय मगन्धन॥ कु ॥ सकयुवव
लयसादसिद्धिम २रावां राववव (लीमनाउनमामि॥ कु
यमगिनिस्त्रिगवआ रुवा वाय्य ममिगयदविनं विगलीमस्त्रि
गि॥ ४५ ॥
॥ नागनामकनि॥ नात्रमाध॥ मयनिजल

वज्रमय

अग्निवायुमण्डल उयसंस्मिन्धीसुमत्र॥ कु ॥ नमामि २ श्री उ
 न्वजसल अमकगुलनिधिसागना॥ कु ॥ विध्वनाथविध्वना
 यिगगुप्रियुवनसंयुक्तिगा २ आत्र ॥ वर्धुमखनयनसुविमा
 ल. वज्रघण्टाप्रिगा॥ कु ॥ मिलकसुवर्णसुभागास्तत्र. वल
 मकूटसिलगि. तन्त्रवृणुलसिलगित्रीवल. सत्ययर्थकसस्ति
 गा॥ कु ॥ वज्रप्रदियादिगा कनलादि. तन्त्रमण्डलसंयुर्ण॥ कु

द्वादशयुमादिकगावयिदिनास. सुवज्रगुननिनऊनसिला॥ कु
 मुद्धिसिद्धिवत्रयदागासमत्रलजिनहानरुवयदागा॥ ४६ ॥
 नागनामकत्रि॥ नात्रमा०॥ श्री कक्यात्रेगिप्रियुवननिवासिग
 श्रीश्रुमिगारुसिलमोलिधल॥ तमासिथीश्रानन्दादिलाकध्वज
 विरुवनव्यायिगसमंगला २ मणिमयस्वरितयवर्गककडाध्वज
 नकवर्णकमनासन २ वेगनागसंयुक्तमूनरुनहानयदाउ

श्रीकक्यात्रे

नानयादिभाके

पुष्पादिना

किमगुगिवनसंयदागा २ अत्र नमना हन. वागममिमपुन. वि
द्विविनायकगणध्वनं ॥ ४७ ॥ ॥ वागमधूमना ॥ मात्र
इर्जमान ॥ यभादिकश्चादिदधरुमिसून्यलि सनभेनूमणुल
सनस्तिगत्रयना २ द्वादशकुजवडवदनसुभावावजवाजा
दिश्रालिंगणा ॥ ॥ रुंरुंरुं रुंरुंरुंरुं दधदिगकुवन. मात्रसजत्र
सम्पाधियात्र ॥ दधश्रालिंगणश्रुदयसंराव्य नांत्रयिदानसम्प

सम्प

त्रयाया २ कुलिषघण्डगजवर्मविश्रुषिगा. कत्रगितमत्रयिधूत्र
धत्रा २ माडूयूत्रिधंरकयात्रखद्रांग. याधयत्रधुवकागिप्रध
ला २ यक्किनवलसकूटश्रालंरुगषटमूद्राश्रुत्रणरुषिगा
२ श्रालि कालि इयि श्रालि रात्राययि. व्याधुवर्मनिवधनरुयू
गन २ नलमिलनमालाश्रुत्रमणीसम्पत्रदिव्यवडुषिनिव
नृधदयया २ जवम २ मालुडुहययिसत्रण. गावंगियत्रमा